3) **डॉ.नगेन्द्र** ने जब आलोचना के क्षेत्र में प्रवेश किया, उस समय तक नन्ददुलारे वाजपेयी और हजारीप्रसाद द्विवेदी, इस क्षेत्र में कुछ दूर तक अपना स्थान बना चुके थे। उन्होंने अपने से पहले के आलोचकों के गुणों को आत्मसात कर उनका विकास करने का प्रयत्न किया और उनके दोषों से भरसक बचने का। उन्होंने आलोचनात्मक निबंधों से आरंभ किया और बाद में सुमित्रानंदन पंत और गुप्त जी के 'साकेत' पर स्वतंत्र पुस्तकों की रचना की।

डॉ. नगेन्द्र अपने दृष्टिकोण में व्यक्तिवादी हैं और युग के वातावरण के अनुरूप उन पर फ्रायड का भी गहरा प्रभाव पड़ा था। आरंभ में व्यावहारिक आलोचना करने के बाद धीरे-धीरे उनकी रुचि काव्यशास्त्र की ओर हो चली। यह आकर्षण उन पर ऐसा हावी हुआ कि बाद में उनका सारा महत्वपूर्ण कृतित्व सिद्धांत-विवेचन के रूप में ही प्रकट हुआ।

व्यावहारिक आलोचना में वे दृष्टि मुख्य रूप से कवि की सौंदर्यानुभूति के विश्लेषण पर टिकाकर, अभिव्यक्ति की सफलता-असफलता की दृष्टि से उसका विश्लेषण करते हैं। कुछ निबंधों में उन्होंने फ्रायड के प्रभाव के कारण मनोविश्लेषणात्मक व्याख्याएँ भी करने का प्रयत्न किया। 'तुलसी और नारी' निबंध में, हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों के विवेचन में और 'देव और उनकी कविता' नाम से प्रकाशित उनके शोध-प्रबंध में भी यह प्रयत्न दिखाई पड़ता है। नगेन्द्र की व्यावहारिक आलोचना की विशेषताओं की उनकी पकड़ गहरी है। अपनी व्यावहारिक आलोचनाओं में उन्होंने काव्य, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र आदि विविध विषय लिए और कृतिकारों में मध्य युग से आधुनिक युग तक। किंतु मुख्य रूप से वे आधुनिक साहित्य के आलोचक हैं। उनकी आलोचनाओं में खंडन-मंडन या चुनौतियों की अपेक्षा व्याख्या-विश्लेषण

Scanned by CamScanner

और अनुशंसा ही अधिक मिलती है उनकी आलोचना में जो शैक्षिक अनुशासनीप्रियता और विभाजन-परिगणन की प्रवृत्ति मिलती है उससे स्फूर्ति और ताज़गी की क्षति भले ही हुई हो लेकिन स्पष्टता और प्रासंगिकता बराबर बनी रही है। शास्त्रज्ञान ने उनकी व्यावहारिक आलोचना को गंभीरता और गरिमा दी है।

सैद्धांतिक आलोचना का जो सिलसिला नगेंद्र ने निबंधों और भूमिकाओं से शुरू किया था, उसकी पराकाष्ठा 'रस-सिद्धांत' में हुई। शुक्ल जी से उनका रस-विवेचन मुख्य रूप से इस बात में भिन्न था कि उन्होंने अनुभूति-तत्व को तो मान्यता दी पर साथ ही उसकी आत्मनिष्ठ आनंदवादी व्याख्या की। इसके अलावा उन्होंने अपने सम्पूर्ण शास्त्र-विवेचन में यथावश्यक पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सामानांतर सिद्धांतों से तुलना कर दोनों के बीच समान तत्वों की खोज का प्रयत्न किया। वे भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र को एक-दूसरे का पूरक मानते थे। हिंदी साहित्य के पाठक में काव्यशास्त्रीय रुझान पैदा करने की दृष्टि से उनका विशेष योगदान है। उन्होंने आलोचना में शास्त्रीय चेतना पैदा की।

अपने उत्तर काल में उन्होंने 'शैली विज्ञान', 'मिथक' और 'साहित्य का समाजशास्त्र' जैसे गंभीर विषयों के विवेचन का हौसला भी दिखाया। पर इन क्षेत्रों में लगे हाथों किसी नए विषय का जायज़ा लेने या पाठकों के सामने उसकी कुछ बानगी प्रस्तुत करने का मोह ही इनकी रचना का कारण रहा होगा। इसके अलावा ये प्रयास न विषय की पूरी जानकारी और न ही मौलिक चिंतन का परिचय देते हैं।

नगेंद्र का महत्व इस दृष्टि से है कि उन्होंने पहले-पहल सहृदयता से छायावाद की व्याख्या की और विशेषकर उसके शिल्प-पक्ष की सूक्ष्मताओं को उजागर किया। छायावाद की आत्मनिष्ठ प्रगीत रचनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में सामने रखने का प्रयास नगेंद्र ने ही किया। अपनी आलोचना दृष्टि को वे उत्तरोत्तर विकसित और पुष्ट करते गए। शास्त्र-विवेचन ने उसे गांभीर्य और गरिमा ही दी।

Scanned by CamScanner

छायावादी कवियों के अलावा जिन आलोचकों ने शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना को एक नई दिशा दी, उनमें नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी और नगेंद्र को शुक्लोत्तर आलोचना की बृहत्-त्रयी के रूप में जाना जाता है। हिंदी आलोचना में इनका योगदान, संक्षेप में इस प्रकार है :

1. ये तीनों आलोचक अलग-अलग ढंग से आचार्य शुक्ल से टकराए। यह टकराहट नन्ददुलारे वाजपेयी के कर्कश सिद्धांत-विरोध में, हजारीप्रसाद द्विवेदी के नए इतिहास-बोध में और नगेंद्र की छायावादी काव्य की सरस व्याख्याओं में प्रकट हुई।

2. इन आलोचको की दृष्टि शुक्ल जी की नैतिक और बौद्धिक दृष्टि की अपेक्षा सौंदर्यनुभूति और कला-प्रधान दृष्टि है।

3. इन आलोचकों में से वाजपेयी जी ने काव्य-सौष्ठव को सर्वोपरि महत्व दिया। उनका प्रमुख योगदान था छायावाद को राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-आंदोलन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करना। उन्होंने स्पष्ट किया कि छायावाद की 'मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है'।

4. वाजपेयी जी की आलोचना की परिधि बहुत व्यापक थी, जिसमें सभी विधाओं और युगों के साहित्य को विषय बनाया गया था।

5. हजारीप्रसाद द्विवेदी का मतभेद साहित्य के प्रति आचार्य शुक्ल के सम्पूर्ण दृष्टिकोण से था। वे सांस्कृतिक निरंतरता और अखंडता के समर्थक थे। उन्होंने भक्ति साहित्य में एक कालक्रमिक चिंतन परम्परा की खोज की और उसकी विभिन्न धाराओं को एक विराट भक्ति चेतना के रूप में देखने का प्रयत्न किया।

6. साहित्य में निरंतरता और अखंडता को पहचानने के लिए उन्होंने काव्य-रूढ़ियों और कवि-प्रसिद्धियों के माध्यम से काव्य के अध्ययन की पद्धति प्रस्तावित की।

7. द्विवेदी जी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा था कि उन्होंने जनता की रुचि को महत्व देते हुए साहित्यिक रुचि को बड़े पैमाने पर परिवर्तित करने का प्रयास किया। जन-जीवन के प्रति मोह का कारण उनका मानवतावादी दृष्टिकोण था।

Scanned by CamScanner

8. इतिहास-बोध और संस्कृति-प्रेम क बावजूद उन्होंने समसामयिक आधुनिक प्रश्नों पर पूरा ध्यान दिया। वे समसामयिकता के साथ परंपरागतता को ऐसे मिलाकर चलते थे कि दोनों एक-दूसरे में अंतर्भुक्त हो जाएँ।

9. नगेंद्र ने पहले-पहल छायावाद की सहृदयता से परख और व्याख्या करते हुए उसकी शिल्पगत विशेषताओं को विशेष रूप से उजागर किया।

10. नगेंद्र का दृष्टिकोण व्यक्तिवादी था और आरंभ में उन्होंने फ्रायडीय प्रभाव के तहत मनोविश्लेषणात्मक व्याख्याएँ भी की। उनकी आलोचनाओं में खंडन-मंडन नहीं, व्याख्या-विश्लेषण और अनुशंसा ही अधिक होती है।

11. उनकी आलोचनाओं का विषय भी साहित्य की सभी विधाएँ और मध्य युग से लेकर आधुनिक युग तक का साहित्य रहा। लेकिन प्रमुखता आधुनिक साहित्य को ही मिली।

12. उन्होंने आरंभ व्यावहारिक आलोचना से किया पर क्रमशः काव्यशास्त्र की ओर मुड़ गए। उन्होंने शास्त्र-विवेचन करते हुए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समानांतर सिद्धांतों की तुलना कर दोनों के बीच समान तत्वों की खोज थी।

13. शैक्षिक अनुशासनप्रियता और शास्त्रबद्धता ने उनकी आलोचना से स्फूर्ति और ताज़गी तो हर ली पर उसके स्थान पर गंभीरता और गरिमा दी।

Scanned by CamScanner